MWC Info CMM Info CMM Infos

Mennonite World Conference | Congreso Mundial Menonita | Conférence Mennonite Mondiale

हमारे अगुवों की ओर से सन्देश

दुखों के मध्य आशा

पेरू में एमडब्ल्यूसी प्रतिनिधिमण्डल ने व्यावहारिक कौशल, बाइबल मनन, और प्रार्थना के साथ कार्यशालाओं में प्रस्तुतिकरण दिया। फोटो: हेंक स्टेनवर्स

जारी करने की तारीख: शुक्रवार, 16 नवम्बर 2018

एक हृदय के कक्षों के समान, एमडब्लयूसी के चार कमीशन ऐनाबैपटिस्ट सम्बन्धित कलीसियाओं के वैश्विक समुदाय की सेवा चार क्षेत्रों में करते हैं: डीकन, फेथ एण्ड लाइफ, पीस, मिशन। इन कमीशनों द्वारा जनरल कॉउंसिल के विचार विमर्श के लिए विषय तैयार किए जाते हैं, सदस्य कलीसियाओं को मार्गदर्शन और संसाधनों का प्रबन्ध किया जाता है, और सामान्य हितों और लक्ष्यों के मामलों में एमडब्लयूसी से सम्बन्धित नेटवर्कों (तंत्रों) या सहभागिताओं को एक साथ मिलकर कार्य करने के लिए बढ़ावा दिया जाता है। निम्नलिखित लेख में अपनी सेवकाई के प्रकाश में एक संदेश प्रस्तुत किया है।

दुख या कष्ट एक विश्वव्यापी वास्तविकता है। आज नहीं तो कल यह सब लोगों को प्रभावित करता है। तौभी, आरम्भ से ही, लोग इस दुख का ठोस उत्तर ढूंढ़ने का प्रयास करते रहे हैं।

यह वास्तव में एक शान्तिदायक सच्चाई है कि बाइबल ने कभी भी मानवीय दुखों से दूरी नहीं बनाई परन्तु हमेशा ही मानवीय दुखों का सिर उठा कर सामना किया है। (उदाहरण के लिए, अय्यूब और विलापगीत की पुस्तकें, और रोमियों 8:18–28)।

रोमियों 8:18–28 में, कराहनेवाली और आशाभरी दृष्टि से देखने वाली एक सहभागिता का वर्णन पाया जाता है जो व्यर्थता और दुखों का अनुभव कर रहे सब लोगों की व्यर्थता और दुखों से उभर कर सामने आ रही है।

1. व्यर्थता और दुख में सहभागिता

सारी मानवजाति के लिए उसकी पतित अवस्था के कारण एक समान अन्त निर्धारित है, जैसा कि उत्पत्ति 3 में उल्लेख किया गया है। पौलुस

प्रेरित कहता है कि सारी सृष्टि ''व्यर्थता'' के आधीन है (रोमियों 8:20)। जीवित और निर्जीव वस्तुएं दोनों ही इस व्यर्थता का एक समान अनुभव करती हैं।

अन्त में, मानव सहित, सारे जीव नाश हो जाते हैं। पौलुस ने सृष्टि में इस व्यर्थता की सड़ाहट और नाश की तुलना ''जच्चा की पीड़ा'' के साथ किया है (रोमियों 8:22)। और, जच्चा की पीड़ा के समान ही, इस सड़ाहट और नाश की गति और तीव्रता दोनों निरन्तर बढ़ते जाते हैं।

हम इस बात को प्रकृति में देख सकते हैं – भूकम्प, हृयूरीकेन, सुनामी, बाढ़, और सूखा – साथ ही मानव के असहनशील आचरण तथा उसके शिष्टाचार, उसकी मानवीय प्रतिष्ठा, और बाइबल–सम्मत नैतिकता में गिरावट में भी।

परन्तु विश्वासी के लिए यह एक शान्ति की बात है कि परमेश्वर इस व्यर्थता की जिम्मेदारी लेता है और पतन की नियति से बचाव के एक उपाय को प्रगट करता है।

2. कराहने में सहभागिता

सृष्टि (पद 22), विश्वासी (पद 23), और पवित्र आत्मा (पद 26) कराह रहे हैं क्योंकि सृष्टि व्यर्थता के आधीन है।

सृष्टि को एक कराहते हुए मानव के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो इस सच्चाई को सामने लाता है कि सृष्टिकर्ता ने जो कुछ बनाया है उसकी वह चिन्ता करता है। और इस चिन्ता के एक पहलू के रूप में, सृष्टिकर्ता परमेश्वर संसार के दुखों और व्यर्थता अपनी सन्तानों को इस तरह से दिखाता है मानों यह स्वयं उनके ही दुख हों, विशेष रूप से संगी विश्वासियों के जीवनों में आने वाले दुख।

विश्वासी लोगों को न सिर्फ अपने दुखों के कारण दुख होता है, परन्तु वे अपने संगी विश्वासियों के साथ जुड़े होने के कारण उनके दुखों में भी सहभागी हो दुखी होते हैं (1 कुरिन्थियों 12:26 से तुलना करें)। इसी तरह से हम अपने संगी मनुष्यों के साथ कराहने की सहभागिता में शामिल होते हैं।

परन्तु, हमसे भी अधिक, स्वयं परमेश्वर अपने लोगों के दुखों में दुख सहता है। पवित्र आत्मा परमेश्वर के लोगों की ओर से कराहता है (पद 26)।

यह विश्वासियों के लिए एक शान्तिदायक बात है कि जब वे दुख सहते हैं, उस समय वे अकेले नहीं हैं। संसार भर के मसीह में उनके भाई बहन उनके साथ हैं, जो उनके दुखों का अनुभव करते हैं, और उनकी भलाई की चिन्ता करते हैं।

3. आशा में सहभागिता

पौलुस चार सच्चाइयों के विषय में बताता है जो दुखों के मध्य शान्तिदायक और आशा से परिपूर्ण हैं:

1. (पद 21). सृष्टि की व्यर्थता का एक उद्देश्य है: परमेश्वर की सन्तानों के महिमामय छुटकारे को साकार करना। जब यह उद्देश्य पूरा हो जाएगा, परमेश्वर सृष्टि को ही इसकी बन्धुआई से छुटकारा दे देगा।
2. (पद 23). हम सृष्टि के दुखों और पीड़ाओं में सहभागिता करते हैं। परन्तु विश्वासियों के लिए परमेश्वर के पास एक योजना है कि वे यीशु मसीह में परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियों के रूप में ईश्वरीय लेपालकपन का अनुभव करें। यही हमारी महिमामय आशा है।
3. (पद 26). हम अकेले नहीं हैं। भले हमारे साथ कोई मनुष्य न हो, परन्तु पवित्र आत्मा हमारे साथ है। यीशु, 'इम्मानुएल' परमेश्वर हमारे साथ है। पवित्र आत्मा हमारे लिए विनती करता है, और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार हमारे लिए प्रार्थना करता है।
4. (पद 28). इस संसार में सड़ाहट, व्यर्थता, दुख, और पीड़ाएं विश्वासियों के हित के लिए है। (ऐसी कोई भी बात नहीं है जो ''हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी'' पद 39।) अर्थात्, कोई भी वस्तु प्रभु यीशु मसीह में परमेश्वर की सन्तान के रूप में हमारे पद को हानि नहीं पहुँचा सकती।

शान्ति देनेवाली ये सच्चाइयाँ हमारे परमेश्वर पर हमारी आशा को बल प्रदान करती हैं। यह आशा हम सब के लिए समान है और इसलिए हम आशा में भी सहभागिता करते हैं।

मेनोनाइट वर्ल्ड कॉंफ्रेंस (एमडब्ल्यूसी) पीड़ा और दुखों की व्यर्थता की सहभागिता का, कराहने की सहभागिता का, और आशा की सहभागिता का एक हिस्सा है और इसलिए एमडब्ल्यूसी डीकन्स कमीशन के सदस्य विशेष रूप से ऐसी कलीसियाओं की सुधि लेने को जाते हैं जो दुखों का सामना कर रहीं हो। यदि परमेश्वर हमारी ओर है, और संगी विश्वासियों और पवित्र आत्मा के रूप में उपस्थित है, तो हमारी विरोधी कौन हो सकता है? (पद 31)।

इसलिए हम ऊँचे शब्द से पुकार कर यह कह सकते हैं, ''परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिस ने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़ कर हैं'' (पद 37)।

– एलिज़ाबेथ कुंजाम मेनोनाइट ब्रदरन चर्च इन इण्डिया की सदस्या हैं। उन्होंने डीकन्स कमीशन में 2015 से 2018 तक सेवाएं दी हैं। यह लेख उन्होंने 2017 में बाढ़ प्रभावित मेनोनाइट ब्रदरन चर्चेज़ इन पेरू की अपनी यात्रा से प्रेरित हो कर लिखा है।